Date - 19-05-2020

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. - Snehababli 1987@gmail.com
Cont. no. - 8409587640
Class - B.A.I (Hons.)

Topic - Conception of Jiva: Ramanuja

Scanned with CamScanner

(6) निवर्तकानुपपत्ति - रामानुज के अनुसार अविद्या का कोई निवर्तक (नष्ट करने वाला) नहीं है। अद्वैतवेदान्ति निर्गुण, निर्विशेष ब्रह्म के ज्ञान को माया को निवर्तक मानते हैं। रामानुज के अनुसार निर्गुण, निर्विशेष ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

अद्वैतवेदान्तियों के अनुसार ब्रह्मज्ञान ही माया का निवर्तक है। निर्गुण, निर्विशेष ब्रह्म के ज्ञान के लिए किसी ज्ञाता की अपेक्षा नहीं है अपितु अज्ञान के निवारण से ही वह प्रकाशित हो जाता है।

(7) निवृत्त्यानुपपत्ति - रामानुज कहते हैं कि यदि माया भावरूप है तो फिर उसका विनाश तर्कतः संभव नहीं है। भावरूप सत्ता का नाश ज्ञान से नहीं हो सकता।

अद्वैतवेदान्तियों के अनुसार माया को भावरूप मानने का केवल इतना तात्पर्य है कि वह अभावरूप नहीं है। यह माया भावरूप होते हुए भी अपनी सत्ता के लिए ब्रह्म पर आश्रित है। अतः अधिष्ठान (ब्रह्म) के ज्ञान के आधार पर एक आश्रित सत्ता की निवृत्ति संभव है।

Scanned with CamScanner

जीव - विचार

रामानुज के अनुसार ईश्वर या ब्रह्म के दो अंश है- चित और अचित। ब्रह्म का यह चित अंश ही जीवात्मा है। यह जीवात्मा शरीर इन्द्रिय, मन, बुद्धि से भिन्न है। यह स्वप्रकाश चेतन द्रव्य है।

Scanned with CamScanner

जीव की अन्य विशेषताएं

* जीवात्मा ईश्वर से भिन्न है, परन्तु उससे स्वतंत्र नहीं। जीवात्मा ईश्वर पर आश्रित है। ईश्वर जीवात्मा का संचालक है।

* जीव ज्ञाता, कर्ता और भोक्ता तीनों है। जीव ही सांसारिक विषयों का ज्ञान प्राप्त करता है, विभिन्न कर्मों को संपादित करता है और उन कर्मों के अनुरूप परिणामों को भोगता है।

* जीव एक नहीं अनेक है। जीव की अनेकता उसके शरीर भेद के कारण है।

* जीव वस्तुतः ईश्वर का अंश है परन्तु अज्ञानवश वह अपने को ईश्वर से पृथक एवं स्वतंत्र मान लेता है। अतः जीव का जन्म अविद्या या अज्ञान के कारण होता है।

* सभी जीव स्वरूपतः समान है। उनमें गुणगत भेद नहीं है परन्तु उनमें मात्रा भेद है।

* आत्मा स्वभावतः आनन्द रूप है। ज्ञान उसका आवश्यक एवं अनिवार्य स्वरूप है।

रामानुज के अनुसार चित या जीवात्मा के तीन प्रकार है—

1. नित्यजीव : नित्य जीव वे है जो कभी बन्धनग्रस्त नहीं होते। वे अविद्या, कर्म आदि से सदैव मुक्त है एवं वैकुण्ठ लोक में निवास करते है।

2. मुक्तजीव: वे जीव जो कभी बन्धनग्रस्त थे परन्तु अब बन्धन से मुक्त हो चुके है, इस श्रेणी में आते है। ऐसे जीव सभी लोकों में अपनी इच्छानुसार विचार करते है

Scanned with CamScanner

3. बद्धजीव : बद्ध जीव वे हैं जो अविद्या और कर्म के कारण जन्म - मरण के चक्र में फंसे हुए हैं। वे जीवन के विभिन्न दुःखों को भोग रहे हैं।

Scanned with CamScanner